VOL- XI ISSUE- XII DECEMBER 2024 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 8.02 ISSN 2349-638x

# कर्मनिष्ठा की मिसाल एक था जॉर्ज कार्व्हर

**डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगांव
ता. चाकुर जि. लातूर (महाराष्ट्र)

एक था कार्व्हर यह राजहंस प्रकाशन, पुणे द्वारा प्रकाशित और वीणा गवाणकर द्वारा अंग्रेजी से मराठी में अनूदित 'एक होता कार्व्हर' यह एक मराठी रचना है। यहाँ इस पुस्तक की हिंदी में समीक्षा करने का एक छोटा सा प्रयास है। इस रचना को अद्योपांत पढ़ने के पश्चात यह सामने आता है कि एक छोटा सा नीग्रो प्रजाति में जन्म हुआ अनाथ लड़का जिसका पालन-पोषण कोई और करता है और वह अपनी कर्मनिष्ठा से अनवरत मेहनत, निरीक्षण करते हुए आगे जाकर प्रा.कार्व्हर नाम से इतना प्रसिद्ध होता है कि अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्राध्यक्षों में से पहले राष्ट्राध्यक्ष थीयडार रूझवेल्ट, दूसरे कॅल्विन कूलिज और तीसरे फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट के साथ उनकी मित्रता हो जाती है। अलग-अलग राष्ट्रों के शिक्षाविद उन्हें मिलने के लिए बेताब रहते हैं।

18 वीं सदी से लेकर 1920 दशक के अंत तक 'नीग्रो' शब्द का इस्तेमाल अफ्रीकी मूल के लोगों के साथ साथ वेस्ट इंडीज, दक्षिण अमेरिका और संयुक्त राज्य अमेरिका में किया जाता था। भारत देश में जिस प्रकार स्वर्ण और दलित अर्थात उच्च नीच की गहरी खाई थी, उसी प्रकार अमेरिका में गोरा-काला भेद प्रचलित था। जो नीग्रो (काले) थे उन्हें गुलाम बनाकर उनका शोषण किया जाता था। तात्पर्य समाज में गुलाम प्रथा का प्रचलन था। गुलामों को लिखने-पढ़ने का तथा स्वतंत्र व्यवसाय करने का कोई अधिकार नहीं था। अमेरिका के मिझूरी राज्य के डायमंड ग्रोव्ह में रहनेवाले किसान मोझेस कार्व्हर और उसकी पत्नी सुजान इस गुलामी प्रथा के विरोधी थे। उन्होंने ज.ग्रैंड से सात सौ डॉलर में मेरी नामक नीग्रो स्त्री को खरीद लिया था। गुलाम प्रथा के समर्थकों ने जब मेरी का अपहरण किया था, तब बहुत ढूंढने के पश्चात मेरी तो नहीं मिली लेकिन उसके छोटे बेटे को ढूंढने में इस कार्व्हर दांपत्य को सफलता मिली। मोझेस ने उस छोटे बच्चे का नाम जॉर्ज रख लिया। यह अनाथ छोटा बच्चा मोझेस और सूजन दोनों के प्रेम में पलने लगा। उसके जीवन को लेकर मोझेस कार्व्हर और उसकी पत्नी सुजान दोनों चिंतित थे। इसलिए कि वह ठीक से न बोल पाता था, न लिखने-पढने में तेज था।

मोझेस कार्व्हर ने जॉर्ज को नीग्रो की पाठशाला में प्रवेश दिलवाया। उस समय नीग्रो को पढ़ने का अधिकार नहीं था। काला-गोरा भेद का प्रचलन था। उसमें भी गोरे लोग नीग्रो को गुलाम के रूप में देख थे और उनके साथ मालिक की तरह व्यवहार भी करते थे। लेकिन मोझेस कार्व्हर इस अनाथ जॉर्ज को जीवन जीने के काबिल बनाना चाहते थे। ऐसे बहुत कम लोग मिलते हैं, जो किसी अनाथ बच्चे को अपने घर में पनाह तो देते हैं साथ ही साथ उसका अपने बेटे की तरह पालन-पोषण भी करते हैं। यहाँ मोझेस कार्व्हर का व्यक्तित्व एक ओर गुलामी प्रथा के विरोधक तथा मानवता के समर्थक के रूप को व्यक्त होता है, तो दूसरी ओर अनाथ बच्चों के जीवन को लेकर चिंतित होना और उसे अपने बच्चों के समान प्यार देना उसके व्यक्तित्व को विशेष और उदात्त बनाता है।

मोझेस कार्व्हर की इच्छानुरूप जॉर्ज नीओशे में शिक्षा के लिए पहुंच तो गया, लेकिन वहां रहने की व्यवस्था न होने के कारण उसे एक पुरानी गोशाला में रहना पड़ा। ज्ञान प्राप्ति के लिए निकले इस बालक को न ठीक से पहनने के लिए कपड़े थे, न रहने के लिए छत। जबरदस्त इच्छा शक्ति, सूक्ष्म निरीक्षण और मेहनत करने की वृत्ति उसे हार कैसे मानने देती। वह घर-घर जाकर काम ढूंढने का प्रयास करता, लेकिन नीग्रो के इस बेटे को कोई कैसे काम देता। स्कूल को छुट्टी होने के बाद वह अंगूर की खेती करनेवाले यायगर साहब को मिलने के लिए गया लेकिन ठंड के कारण यायगर की मृत्यु हो गई थी।

1876 में फोर्ट स्क्वाड में उसने प्रवेश लिया। पेन मेडम (पेनबाई) ने उसको काम के लिए अपने घर में रखा। वहां रहकर घर में स्वच्छता रखना, बगीचे की देखरेख करना यह सब देखकर पेन मेम भी उससे प्रभावित हो गई। काला-गोरा इस भेदभाव के कारण गोरे लड़के स्कूल में जॉर्ज की पुस्तकें छीनकर लेते थे। ऐसी कठिन विपदा में भी उसने फोर्ट स्कॉट में वाइल्डर हाउस होटल के बाजू में कपड़े धोने का काम आरंभ किया। उसकी स्वभाव और मेहनती वृत्ति के कारण उसकी दुकान भी अच्छी चलने लगी। तेरह वर्ष की आयु में ही सृष्टिविज्ञान की अध्यापिका को अपने ज्ञान से उसने प्रभावित किया था। अपनी निरीक्षण क्षमता, अद्भुत कर्मनिष्ठा और जो भी काम मिलता उसे बड़ी निष्ठा और तन्मयता के साथ करने की उसकी वृत्ति उसे पथ दर्शन का काम करती थी।

नीग्रो कैदियों की दयनीय स्थिति को उसने करीब से देखा था। बंजर भूमि में कभी न देखा हुआ अलग सा फूल का उसने रेखांकन किया था। उस चित्र को उसे सम्मान भी मिला। आगे उसे ल्यूसी मौसी के घर आश्रय मिला, जिसका परिवार सीमार नाम से जाना जाता था। जॉर्ज अब तक जॉर्ज कार्व्हर नाम से पहचाना जाता था। बहुत दिनों के बाद वह माता-पिता को मिलने के लिए डायमंड ग्रोव्हर को जाने के लिए निकला। अपनी मेहनत से जमा पूंजी में से उसने कार्व्हर माता-पिता के लिए कुछ भेंट वस्तुएं ली। कार्व्हर को देखकर पति-पत्नी दोनों को काफी आनंद हुआ। ज्ञान की लालसा ने उसे अपने घर बैठने नहीं दिया। पुनः वह डायमंड ग्रोव्ह छोड़कर दसों दिशाओं में ज्ञान प्राप्ति के लिए निकल पड़ा।

1885 में कनेक्झस के हाइलैंड विद्यापीठ में उसने प्रवेश के लिए आवेदन किया। प्रवेश लेनेवाला यह विद्यार्थी भले ही प्रतिभाशाली हो लेकिन था कृष्ण वर्णीय नीग्रो। विद्यापीठ के अध्यक्ष द्वारा यह पूछने पर कि आप शिक्षा लेकर आगे क्या करोगे ? क्या आपको नही लगता कि आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं ? तब जॉर्ज कार्व्हर का यह कहना कि, "समय ईश्वर के आधिन है, समय को निश्चित करनेवाला मैं कौन ? ईश्वर की इच्छा से ही मैं यह राह चल रहा हूं। मैं कॉलेज में शिक्षा अवश्य लूंगा। क्योंकि मुझे आगे बहुत काम पूर्ण करने हैं। उसके लिए मुझे मेरी तैयारी करनी आवश्यक है।"1( काळ ईश्वराधीन आहे. माझं वेळापत्रक करणारा मी कोण ? ईश्वरेच्छेनेच माझी वाटचाल सुरू आहे. मी कॉलेजमध्ये शिक्षण घेणार आहे. कारण मला काहीं कामं पार पाडायची आहेत.त्यासाठी मला माझी तयारी केलीच पाहिजे.) यह उसकी अटूट इच्छा शक्ति को व्यक्त करता है।

जॉर्ज कार्व्हर सीधा साधा लड़का था। पहनने के लिए उसके पास कपड़े भी ठीक से नहीं थे। कपास की खेती में भी वह काम करता था। आगे वह 'आयोवा' राज्य के 'विंटरसेट' गांव के 'शुल्त्स' होटल में काम करने लगा। वहां उसकी मुलाकात मिलहॉलैंड नामक गोरे व्यक्ति से हुई, जो उसे मिलने के लिए वहां आया था। वह उसे अपने साथ घर ले आया। मिलहॉलैंड दांपत्य को जब जॉर्ज ने कॉलेज की शिक्षा लेने की अपनी इच्छा सुनाई और किस प्रकार हाइलैंड विद्यापीठ ने नीग्रो होने के कारण उसे बाहर कर देने की आपबीती सुनाई। मिलहॉलैंड के घर रहकर वह सौ.मिलहॉलैंड से संगीत का ज्ञान प्राप्त करने लगा और वहीं पर बिना समय गंवाए उनके बगीचे में पूरी निष्ठा के साथ खुदाई करना और नए पौधे लगाने का काम करता रहा। सौ. मिलहॉलैंड के भतीजे डॅन ब्राउन की सहायता से जॉर्ज ने सिंप्सन कॉलेज में प्रवेश लिया। इस कॉलेज के कला विभाग की डायरेक्टर श्रीमती इ.एम.बड के मार्गदर्शन में जॉर्ज ने चित्रकला का अभ्यास भी किया। चित्रकला के साथ-साथ संगीत की साधना भी उसकी चालू थी। उसकी सुरीली आवाज की सभी सराहना करते थे।

1891 में सत्ताइस वर्ष के जॉर्ज ने सिंप्सन कॉलेज छोड़कर एम्स में वनस्पतिशास्त्र और कृषिरसायनशास्त्र संकाय के लिए प्रसिद्ध 'आयोवा स्टेट' कॉलेज में प्रवेश लिया। अमेरिका के राष्ट्रीय सचिव और कैबिनेट के सदस्य श्री जेम्स विल्सन उस समय स्टेट कॉलेज के यूनाइटेड स्टेट्स एक्सपेरिमेंट स्टेशन के 'संचालक' थे जिन्होंने जॉर्ज को अपने ऑफिस में रहने की अनुमति दी। जॉर्ज ने वहां सैनिक विभाग में अपना पंजीकरण कर कैप्टन की उपाधि भी प्राप्त की थी। उस कॉलेज के प्रा. विल्सन और श्री बढ़ ने जॉर्ज के लिए कपड़े लेने की ठान ली थी, जो विद्यार्थियों के जरिए उन्हें दिलवाए भी गए। कोई भी कार्य पूरी निष्ठा के साथ करने की वृत्ति जॉर्ज को अन्य लोगों से अलग करती थी। "कलम करने से पेड़ का विकास गति से होता है। किसी वातावरण से अगर कोई पौधा टिकता नहीं, तो विशिष्ट वनस्पति का कलम (निरोपण) उस पौधे की नीव पर करने से उसका विकास गति

से होता है, यह उन्होंने प्रात्यक्षिक रूप में लोगों को दिखाया था।"

1894 को जॉर्ज को आयोवा स्टेट कॉलेज से विज्ञान संकाय की उपाधि मिली। इसके पीछे सौ. मिलहॉलैंड, लिस्टन, श्री बड, मारियाफूफा, मार्टिन, श्री विल्सन, श्रीमती बड आदि कई महात्माओं का योगदान रहा था। आगे प्रा.वालेस के मार्गदर्शन में अनुसंधान का कार्य उन्होंने आरंभ किया। बंजर कृषि को अधिक उपजाऊ बनाने की कोशिश इन गुरु शिष्यों की थी। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए जॉर्ज ने "माइकोलॉजी (Mycology) अर्थात कवकशास्त्र (बुरशी-अळंबी शास्त्र) का चयन किया था।"2 (मायकॉलॉजी (Mycology) म्हणजे कवकशास्त्र (बुरशी-अळंबीचे शास्त्र) हा विषय निवडला.) इस विषय में जॉर्ज को इतनी प्रसिद्धि मिली कि युवा स्टेट रजिस्टर में प्रकाशित अपने आलेख की पुष्टि के लिए प्रा. बड ने अपने शिष्य जॉर्ज कार्व्हर का संदर्भ दिया था। जॉर्ज कार्व्हर ने पूरे आयोवा राज्य में फसलों की बीमारी को लेकर प्रबोधन का कार्य किया। 1896 में जॉर्ज कार्व्हर ने एग्रीकल्चरल एंड बैक्टीरियल बॉटनी इस विषय की M.S. यह उच्च उपाधि संपादन की।

अमेरिका में नीग्रो की स्वतंत्रता को स्वीकृति मिलने के बावजूद भी उनके सामने अनेक कठिनाइयां थी। वे राजकीय गुलामी से तो मुक्त हो गए थे लेकिन सामाजिक नहीं। ऐसे समय जॉर्ज कार्व्हर एक नीग्रो युवक होकर भी कृषितज्ञ के रूप में प्रसिद्ध होने लगा। यह वह समय था जहां अलाबॅमा की भूमि को बचाने को लेकर डॉ. बुकर टी. वाशिंग्टन हताश थे। क्योंकि अलाबॅमा की बंजर जमीन में अच्छी फसल नहीं आती थी। फसल के अभाव में जानवरों का पालन-पोषण करना भी मुश्किल था। परिणाम स्वरूप गुलामी से मुक्त नीग्रो भाइयों की न वे सेवा कर सकते थे, न उनके हाथों को काम दे पाते थे। ऐसे समय उन्हें किसी कर्तव्यपरायण और कर्मरत व्यक्ति की आवश्यकता थी। उन्होंने जॉर्ज कार्व्हर को पत्र लिखकर यहॉं आने का निमंत्रण भेज दिया। पत्र पढ़कर जॉर्ज कार्व्हर अपने निजी विकास को छोड़कर तुरंत अपने निग्रो भाइयों की सेवा के लिए निकल पड़ा।

कठिन परिस्थितियों में डॉ.वाशिंग्टन के साथ कार्य करने का उसे अवसर मिला। कपास की खेती के अलावा नीग्रो लोगों को कुछ भी नहीं आता था। जॉर्ज कार्व्हर ने उन्हें प्रबोधन करने का कार्य किया। कार्व्हर ने अपने अनुसंधान का व्यवसाय नहीं बनाया बल्कि सामान्य लोगों के लिए उसका उपयोग किया। मूंगफली पर उसका जो अनुसंधान था वह खास था। मूंगफली का तेल निकालने के बाद जो अनावश्यक शेष सामग्री रहती है, उससे दूध बनाने का महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने किया। साथ ही साथ उससे जीवनोपयोगी विविध वस्तुओं का निर्माण भी उन्होंने किया। डॉ.वाशिंग्टन और जॉर्ज कार्व्हर की मेहनत रंग लाई, वहां काफी फसल आई, अच्छा उत्पादन भी होने लगा। देखते ही देखते दोनों की मेहनत से वहां विकास की, ज्ञान की और समृद्धि की गंगा अवतरित हो गई थी।

कपास, रतालू, टोमेटो तथा मूंगफली की बुवाई के साथ साथ वराह पालन, पशुपालन का भी प्रबोधन होने लगा। रतालू से खानेयोग्य उपयुक्त आटा बनाने से लेकर "मूंगफली का रासायनिक विभाजन तथा विघटन करके विघटित किए हुए तत्वों का विविध पद्धतियों से संयोग कर उससे उन्होंने तीन सौ अलग-अलग वस्तुएं तैयार की। जैसे - चर्बी, रैक्झीन, शक्कर, स्याही, बूट-पॉलिश, रंग, डाढी का साबुन, खाद, मुलायम कागज, कृत्रिम फर्श, ग्रीस, माखन, प्लास्टिक, दूध, चीज, सौंदर्य के साधन, शैंपू, व्हिनेगर, कॉफी, क्विनाईन, लकडिय़ों का रंग, बालों में होनेवाला डैंड्रफ नष्ट करनेवाली दवा, खाद्य तेल आदि"3 (शेंगदाण्याचं रासायनिक पृथक्करण करुण, विघटन करुन, विघटित केलेल्या घटकाचे विविध पध्दतीने संयोग करुन त्याआधारे पुढे त्यांनी तीनशे वेगवेगळया वस्तू तयार केल्या. उदाहरणार्थ चरबी, रेझीन, साखर, शाई, बूट-पॉलिश, रंग, दाढीचा साबण, खत, मऊ गुळगुळीत कागद, कृत्रिम फरशा, ग्रीस, लोणी, प्लास्टिक, दूध, चीज, सौंदर्यप्रसाधन, शांपू, व्हिनेगर, झटपट कॉफी, पर्यायी क्विनाईन, लाकडासाठी रंग, केसातील कोंडा नाहीसा करणारं औषध, खाद्यतेल इत्यादी.) पदार्थ बनाने में उन्हें सफलता मिली। कर्तव्य को बंधन में बंधा नहीं जा सकता, जो कर्तव्य बंधनों में बंदिश्त हो जाता है उसका विकास नहीं होता और जिस शास्त्र का समाज के लिए उपयोग नहीं होता, वह शास्त्र मृतप्राय हो जाता है यह जॉर्ज कार्व्हर की धारणा थी। इसीलिए अपने नीग्रो भाइयों के विकास के लिए वे निरंतर कर्मशील रहे।

1908 में जब वह डायमंड ग्रोव्हर को आया तब उसके बाबा अर्थात मोझेस ग्रोव्हर 96 वर्ष के थे और माता सूजनबाई का स्वर्गवास हुआ था। काबिल बेटे को देखकर

मोझेस बाबा काफी खुश थे यह उनकी अंतिम भेंट थी। 1916 में लंदन की 'रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स' इस संस्था ने प्रा.कार्व्हर को अपनी सदस्यता दे दी। धर्म और विज्ञान का समन्वय करने में प्रवीण थे। प्रकृति को लेकर उनका कहना था कि, "प्रकृति यह ईश्वर का प्रक्षेपण केंद्र है। वहां से हमेशा संदेश प्रक्षेपित किए जाते हैं। हमें उन प्रक्षेपित ध्वनि लहरियो को पहचानने आना चाहिए।"4( निसर्ग हे परमेश्वराचं प्रक्षेपणकेंद्र आहे. तिथून सतत संदेश प्रक्षेपित केले जातात. आपल्याला त्या ध्वनि लहरी समजून घेता आल्या पाहिजेत.) साथ ही साथ ईश्वर के अस्तित्व को लेकर उनका कहना था कि," ईश्वर के अस्तित्व को लेकर आपको संदेह क्यों है ? विद्युत को किसी ने देखा है क्या ? नहीं न ! विद्युत शक्ति से ही दिया जलता है न ? उसी प्रकार ईश्वर का अस्तित्व है ! वह दिखता नहीं लेकिन अपने आसपास की घटनाओं से उसका अनुभव किया जा सकता है।" डॉ. वाशिंग्टन के साथ उनका इतना अधिक स्नेह एवं अटूट विश्वास था कि डॉ.वाशिंग्टन की मृत्यु के पश्चात वे पूरी तरह से हताश हो गए थे। डॉ.वाशिंग्टन के दाह संस्कार में अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष रूझवेल्ट स्वयं उपस्थित थे, जिन्होंने डॉ. कार्व्हर को सांत्वना देते हुए कहा था कि,"आपने जो कार्य हाथ लिया है उससे अधिक दूसरा कोई भी महत्वपूर्ण नहीं है।"5 ( तुम्ही जे कार्य हाती घेतलं आहे त्यापेक्षा अधिक महत्वाचं दुसरं कार्य नाही ! ) इससे डॉ.कार्व्हर के सामाजिक, वैज्ञानिक तथा कृषिविषयक योगदान को आंका जा सकता है।

कृषि उत्पादन में से अनावश्यक हिस्सा उद्योग के लिए किस प्रकार कच्चे माल के रूप में आवश्यक साबित होता है इसकी जानकारी लेने के लिए स्वीडन के युवराज टस्कीगीत तीन सप्ताह तक उनके पास रहे। प्रा.जॉर्ज कार्व्हर का कृषि विषयक अनुसंधान देखकर आश्चर्यचकित हो गए थे। यहां तक की महात्मा गांधी जी के साथ भी उनका पत्र व्यवहार होता था। महात्मा गांधी जी को उन्होंने "पौष्टिक आहार बताया था। साथ ही साथ भारत में अधपेट रहनेवाली जनता के लिए अनाज तत्व की पूर्ति करनेवाली वनस्पतियों की गुणवत्ता के साथ जानकारी भी दी थी। विशेष बात यह कि वे सभी वनस्पतियां हिंदुस्तान में सहजता के साथ उपलब्ध होनेवाली थी।"6 ( पौष्टिक आहार सांगितला होता. तसंच भारतातील अर्धपोटी जनतेसाठी अन्न घटकांची गरज भागवू शकणाऱ्या वनस्पतीची माहिती दिली होती. विशेष म्हणजे त्या सर्व वनस्पती हिन्दुस्तानात सहजासहजी उपलब्ध असणाऱ्या होत्या.) हमेशा प्रकृति के बीच में रहकर प्रकृति के रहस्य को खोजते रहते थे और वहां से लौटकर प्रयोगशाला में अनुसंधान का कार्य करते रहते थे। यहां निरंतर कर्मरत रहने की वृत्ति हमारे सामने आती है।

23 दिसंबर 1929 के 'मांटगोमरी एडव्हर्टायझर' समाचार पत्र में कहा गया था कि, संसार में किसी भी वैज्ञानिक ने जितना कृषि विषयक संशोधन किया था, उससे कई अधिक अकेले कार्व्हर ने किया था। उन्हें आर्थिक लोभ कहीं भी नहीं था। जब अपनी इच्छा से और आग्रह से डॉ. ह्युस्टन ने उपहार के रूप में कुछ न कुछ मांगने की बात कही तब डॉ.कार्व्हर ने हीरे की मांग की थी। यह सुनकर प्रसन्न होते हुए डॉ. ह्युस्टन ने एक हीरे की अंगूठी भेंट की। कुछ दिनों के बात जब उन्होंने डॉ. कार्व्हर को पूछा, जो मैंने अंगूठी दी थी वह आप क्यों नहीं पहनते। तब उन्होंने अंगूठी लेने के अपने उद्देश्य को बताते हुए कहा "मेरे इस संग्रह में केवल हीरे की कमी थी। मेरे छात्रों को मैं अन्य खनिज दिखा सकता था ; केवल हीरा दिखा नहीं सकता था। आपने मेरी समस्या को दूर किया। अब हीरा कैसा रहता है यह समझने के लिए छात्रों को कल्पना शक्ति पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।"7 ( "या माझ्या संग्रहात वाण होती ती फक्त हिऱ्याची. माझ्या विद्यार्थ्यांना मला इतर सारी खनिजं दाखवता येत होती; फक्त हिरा दाखवता येत नव्हता. तुम्ही माझी अडचण दूर केलीत. आता हिरा कसा असतो हे जाणून घेण्यासाठी विद्यार्थ्यांना कल्पनाशक्तीवर विसंबून राहिला नको.") अर्थात डॉ. कार्व्हर ने हीरे को धन या संपत्ति के रूप में न स्वीकार कर एक खनिज के रूप में स्वीकरा था।

डॉ.कार्व्हर को शरीरशास्त्र का भी ज्ञान था। उनके बारे में डॉ. शेनॉल्ट का यह कहना कि,"उनको शरीरशास्त्र का गहरा ज्ञान था। उनकी उंगलियों को मृत स्नायु की पहचान होती थी। किसी निपुण फिजियोथैरेपिस्ट से भी अधिक कुशलता उनके हाथों में थी।"8 ("त्यांना शरीर शास्त्राचं सखोल ज्ञान होतं. त्यांच्या बोटांना मृत स्नायू कळत. एखाद्या निष्णात फिजीओथेरपीस्टपेक्षाही अधिक कौशल्य त्यांच्या हातात होतं.") यह डॉ. कार्व्हर की शरीरशास्त्रों से संबंधित कुशलता को ही व्यक्त करता है। अपने कर्म से उन्होंने अपने सभी निग्रो भाइयों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक सामर्थ्य को और भी मजबूत बनाया था। ऐसे मेधावी प्रतिभा

के धनी एवं सामान्य से असामान्य बना हुआ व्यक्तित्व 5 जनवरी 1943 को इस संसार को छोड़कर चला गया। शेष रह गई उसकी कर्म-निष्ठा, जो हमारे लिए निश्चित ही प्रेरणादाई है।

**निष्कर्ष :-**

'एक था कार्व्हर' यह पुस्तक सही मायने में छात्रों के लिए या यूं कहिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए पढ़ना आवश्यक है। अपने व्यक्तित्व विकास के लिए तथा जीवन में सफलता पाने के लिए निश्चित रूप से यह पुस्तक मिल का पत्थर साबित होती है। इसमें डॉ. कार्व्हर के जीवन में बचपन से लेकर उच्च शिक्षा लेने तक विविध समस्याएं चित्रित हुई है, जिसका उन्होंने अपने कर्म कौशल्य से सामना किया। एक कर्मयोगी, कृषितज्ञ, वैद्यकशास्त्र, फिजियोथेरेपी के ज्ञाता आदि उनके व्यक्तित्व के विविध आयाम हमारे सामने आ जाते हैं। इस अनुदित पुस्तक को पढ़ने के पश्चात कुछ निष्कर्ष बिंदु हमारे सामने आते हैं, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। जैसे -

- कर्मनिष्ठा जीवन का मूलाधार है, उसी से ही जीवन सफल बन जाता है।
- कर्मनिष्ठा ही नित् नूतनता को जन्म देती है।
- कितनी भी समस्याएं क्यों न आए, अगर कोई अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहता है, तो निश्चित रूप से उसे सफलता मिलती है।
- कोई भी कार्य छोटा-बड़ा या उच्च-नीच नहीं रहता। प्रत्येक कार्य को करने की जिज्ञासा और लगन चाहिए।
- अमीरी गरीबी से तथा भरपूर संसाधनों से किसी को प्रतिष्ठा नहीं मिलती। प्रतिष्ठा के लिए सच्चे कर्म की आवश्यकता होती है और जीवन की ओर देखने का सही नजरिया।
- प्रकृति ही मनुष्य के सही व्यक्तित्व को विकसित करती है।

कुल मिलाकर डॉ. कार्व्हर बचपन से ही विविध समस्याओं का सामना करते हुए सफलता की राह निकालनेवाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन में कर्म को सबसे महत्वपूर्ण माना। प्रकृति में रहकर प्रकृति के सहयोग से ही समाज कल्याण के लिए जीवन भर कार्य करते रहे। उनकी कर्मनिष्ठा ने ही उनकी पहचान बनाई थी। अतः उनके व्यक्तित्व के विविध आयाम निश्चित रूप से छात्र के लिए या यूं कहिए हर व्यक्ति के लिए लाभदायक सिद्ध हो जाते हैं।

**संदर्भ सूची :-**

1) अनुवादक वीणा गवाणकर - एक होता कार्व्हर - राजहंस प्रकाशन, पुणे - पृ. 46
2) अनुवादक वीणा गवाणकर - एक होता कार्व्हर - राजहंस प्रकाशन, पुणे - पृ. 65
3) अनुवादक वीणा गवाणकर - एक होता कार्व्हर - राजहंस प्रकाशन, पुणे - पृ. 117
4) अनुवादक वीणा गवाणकर - एक होता कार्व्हर - राजहंस प्रकाशन, पुणे - पृ. 131
5) अनुवादक वीणा गवाणकर - एक होता कार्व्हर - राजहंस प्रकाशन, पुणे - पृ. 136
6) अनुवादक वीणा गवाणकर - एक होता कार्व्हर - राजहंस प्रकाशन, पुणे - पृ. 139
7) अनुवादक वीणा गवाणकर - एक होता कार्व्हर - राजहंस प्रकाशन, पुणे - पृ. 151
8) अनुवादक वीणा गवाणकर - एक होता कार्व्हर - राजहंस प्रकाशन, पुणे - पृ. 153